ISSN 2321-4945

द्विभाषी

राष्ट्रसेवक

वर्ष : 11 ❖ अंक : 4 ❖ जुलाई, 2019

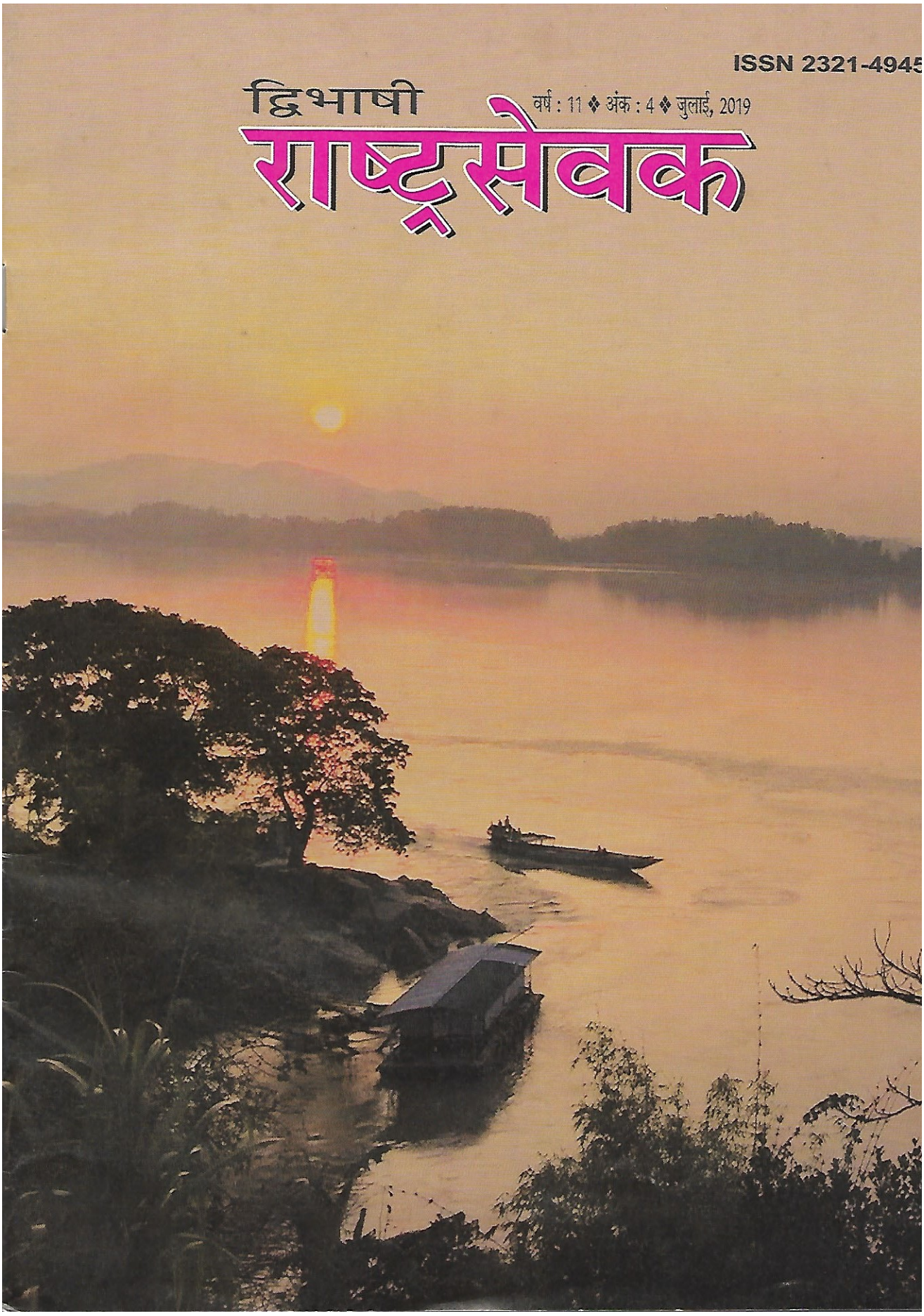

Postal Rgd. No. GH-127/2019-2021 ISSN 2321-4945

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का
साहित्य-कला-संस्कृति विषयक मासिक मुख-पत्र

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 11 जुलाई, 2019 अंक : 4

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

[केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित]

सलाहकार
श्री हरिकांत नाथ
डॉ. अच्युत शर्मा
डॉ. नारायण तालुकदार
प्रो. दिलीप कुमार मेधी
प्रो. मोहन
प्रो. आर.एस. सर्राजु
श्री शंकर प्रसाद साहू

संपादक
डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
(मो. 9435340285)

कार्यकारी संपादक
श्री धीरेन चंद्र शर्मा
(मो. 6001523674)

शब्द-संयोजन व अलंकरण
रति कांत कलिता

वार्षिक शुल्क : दो सौ रुपये
अर्द्धवार्षिक : सौ रुपये
एक प्रति : बीस रुपये

प्रकाशक
डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी-781032

'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लेखादि भेजने का पता :
संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
रूपनगर, गुवाहाटी-781032
मो. 9435340285, 9101541380
E-mail : arps.guwahati@gmail.com

विषय-सूची

हिंदी विभाग

सामयिकी 2
• गांधीवादी चेतना के कवि : नरेंद्र शर्मा — डॉ. राजीव कुमार 3
• समकालीन असमीया और हिंदी कविता में अभिव्यक्त नारी की दशा एवं दिशा — डॉ. बाबुल बरुवा 6
• कथ्य की दृष्टि से 'मैं जनक नंदिनी' और 'बिदेह नंदिनी' उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन — पूजा बरुवा 10
• आंचलिक उपन्यास और फणीश्वर नाथ रेणु का मैला आँचल — जिनाक्षी चुतीया 17
• पितृसत्तात्मक समाज : कृष्णा सोबती और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में — अंकुमणि बरदलै 22
• समिति समाचार 28

অসমীয়া বিভাগ

• আমাৰ দেশৰ প্রেক্ষাপটত নাৰী আৰু নাৰী দিৱসৰ প্রাসংগিকতা — চন্দনা শর্মা ২৯
• এটা মুকলি সুৰৰ সপোন ধ্বনি (কবিতা) — ড° ৰাজীৱ ভট্টাচার্য ৩২

लेखक/लेखिकाओं से अनुरोध : • 'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' के लिए भेजे जाने वाले लेखादि साहित्य, कला, संस्कृति विषयक होने चाहिए। • भेजे गये लेखादि साफ अक्षरों में या टाइप कराकर ही भेजें। • अनूदित लेखों के लिए मूल लेख का उल्लेख करना अनिवार्य है। • सभी कानूनी विवादों का निपटारा गुवाहाटी न्यायालय के अधीनस्थ होगा।

आंचलिक उपन्यास और फणीश्वर नाथ रेणु का मैला आँचल

✍ जिनाक्षी चुतीया

आंचलिक उपन्यास कहने से साधारणत: किसी एक विशेष अंचल को केंद्र में रखकर रचा गया उपन्यास को समझा जाता है। आंचलिक उपन्यासों में किसी पिछड़े हुए अज्ञात अंचल या किसी अपरिचित या अर्धपरिचित जाति के जीवन को पूरी सहृदयता के साथ चित्रित किया जाता है। साधारणत: अंचल कहने से किसी भौगोलिक परिसीमा के भीतर निर्दिष्ट भूखंड को समझा जाता है, लेकिन आंचलिक उपन्यास निर्दिष्ट भूखंड में निवास करनेवाले जन-गण की आशा-आकांक्षा, रीति-नीति, विश्वास, लोक-उत्सव, गीत, लोक-कथा, बौद्धिक, सामाजिक, अर्थनैतिक, दिशाओं के साथ-साथ उन लोगों की भाषा, जीवन-धारण की पद्धति आदि सबको समेट लेता है, लेकिन किसी एक निर्दिष्ट अंचल को लेकर रचा गया उपन्यास आंचलिक उपन्यास नहीं हो सकता। आंचलिक उपन्यास होने के लिए किसी एक परिसीमित खंड या अंचल की जीवन पद्धति, बातचीत में स्वकीय रीति, स्थान, रीति-नीति, विश्वास, अंधविश्वास, भाषा की विशेषताओं का होना आवश्यक है। आंचलिक उपन्यास रिजनेल नावेल का समानार्थी माना जा सकता है। आंचलिक उपन्यासकार के लिए आवश्यक है कि वह उस अंचल या जाति के जीवन में घुलामिला हो, जिसका उसे चित्रण करना है। साथ ही एक विशेष अंचल की एक पूर्ण चित्र अंकन करने का प्रयास करे। इसी कारण आंचलिक उपन्यास कि गति एकमुखी न होकर बहुमुखी होता है। आंचलिक उपन्यासों ने सिद्ध किया है कि ग्रामांचल पर लिखना आधुनिक जीवनबोध को नकारना नहीं है। आधुनिक प्रगति, मूल्यों के संघर्ष और भौतिक परिवर्तन आदि को आंचलिक उपन्यासकारों ने गाँव के संदर्भ में देखा। स्वतंत्रता के बाद ग्रामांचल का स्वरूप बहुत बदल गया है। औद्योगिकीकरण और नगरीकरण की उपलब्धियों के साथ-साथ उनकी विकृतियाँ भी गाँव और कस्बे के जीवन में घर कर गयी है। ग्रामीण जीवन के इसी बदले हुए परिवेश के प्रति उपन्यासकार का आकर्षित होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि मैला आँचल, परती परिकथा, बलचनमा, जला टूटता हुआ, आधा गाँव, राग दरबारी, अलग अलग वैतरणी, बबुल आदि उपन्यासों में स्वातंत्योत्तर ग्रामांचल की सही और सच्ची पहचान करने की कोशिश है। आंचलिक उपन्यासों में लेखक की रचनाशैली संपूर्ण अलग है। आंचलिक उपन्यासों में कथानक की अभिनवत्व, विशिष्ट परिवेश चित्रण, चरित्रों की परिवर्तित मन:स्थिति, आंचलिक प्रसंग और स्वरचित भाषाओं का प्रतिफलन, प्रतीक और परिवेश कि सार्थक प्रतिच्छवि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इन दिशाओं के सफल चित्रण से ही एक आंचलिक उपन्यास सार्थक सिद्ध होता है। ऐसे उपन्यासों में लेखक की मूल दृष्टि अंचल विशेष की समग्रता के ऊपर रहती है और किसी व्यक्ति के विपरीत अंचल विशेष ही महत्व प्राप्त करती है। आंचलिक उपन्यास के लेखक को जनता के पास जाना नहीं पड़ता, क्योंकि वह स्वयं जनता का अंग होता है। जनता का अंग बनकर रहनेवाला समष्टिमूलक जीवन दृष्टि आंचलिक उपन्यास की सृष्टि के लिए पहली अनिवार्य शर्त है। आंचलिक उपन्यास के लिए दूसरी अनिवार्य शर्त समाजकेंद्रितता है। आंचलिक उपन्यास के केंद्र में कोई विशिष्ट समाज होता है। व्यक्ति विशेष नहीं आंचलिक उपन्यास में चित्रित समाज का किसी निश्चित भौगोलिक इकाई से अनिवार्यत: संबद्ध होने के लिए बाध्य नहीं है। चरित्र चित्रण की दृष्टि से

आंचलिक उपन्यास की सबसे पहली विशेषता पात्र बहुलता है। मैला आँचल में लगभग दो सौ पात्र हैं। आंचलिक उपन्यास में समाज की नायकता होती है, कोई पात्र विशेष नायक नहीं होता। समाज की नायकता में ही सभी पात्र प्रमुख या गौण रूप से उपस्थित होते हैं। आंचलिक उपन्यास के पात्रों में व्यक्तिवैचित्र्य का गौण रूप से उपस्थित होता है। आंचलिक उपन्यासों में देशकाल का तत्व विशेष रूप से उभर कर सामने आते हैं। विशेषत: पिछड़े हुए समाज का जीवन नैसर्गिक पर्यावरण के साथ घनिष्ठतया संबद्ध होता है। जिस प्रकार समाज जीवन का चित्रण करने के लिए समाज के विविध अंगों का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्ग चरित्रों को उभारा जाता है, उसी प्रकार किसी समाज-जीवन का चित्रण करने के लिए जिस गाँव या कस्बे को आधार बनाया जाता है, वह गाँव या कस्बा अपनी समानधर्मी आंचलिक बस्तियों का प्रतिनिधित्व करती है। मैला आँचल का मेरीगंज भी ऐसा ही एक प्रतिनिधि गाँव है। रेणु ने खुद कहा है - मेरीगंज अपने अंचल के पिछड़े गाँव का प्रतीक है (मैला आँचल, भूमिका भाग, पृ सं.4)।

आंचलिक उपन्यास को खड़ा करने के लिए भाषा का असाधारण महत्व है। हिंदी भाषी क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। इस क्षेत्र में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। रेणु के आंचलिक उपन्यासों में मैथिली के स्पर्श से युक्त कचराही बोली का प्रयोग देखे जाते हैं। साथ ही गीतों की भाषा पूर्णत: मैथिली है। इसके अतिरिक्त गद्य में कहीं कहीं मैथिली का प्रयोग होते हुए भी मैला आँचल में खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग मिलते है। हिंदी साहित्य में मैला आँचल सर्वप्रथम आंचलिक उपन्यास है। मैला आँचल ने आंचलिक परिवेश के अलावा समाज केंद्रित आंचलिक जनजीवन को सबसे पहले अपना विषय बनाया। अनेक दिशाओं से यह उपन्यास महत्वपूर्ण है।

फणीश्वर नाथ रेणु को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यासकार माना जा सकता है। इनका पहला उपन्यास मैला आँचल इनकी ख्याति का आधार बन गया है। उनके उपन्यास में समाज जीवन की वास्तविक छवि अंकित हुई है। उनकी रचनाओं में ग्राम्य जीवन की छोटी छोटी कहानियाँ, सामाजिक आचार-विचार, धर्मीय रीति-नीति, झगड़ा, छल-कपट, जाती-कुल-वंश आदि को लेकर भेदभाव, नीचता-महानता, यौन विशृंखलता, राजनैतिक छल, नैतिक हीनता, जाग्रत युवा-मानसिकता आदि का समन्वय प्रतिफलित हुआ है। युग के प्रति रेणु की जागरुकता उनके कथा साहित्य से सहज ही स्पष्ट है। सन 1954 में प्रकाशित मैला आँचल का कथानक सन् 1947-48 से संबंधित है। इसमें बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मेरीगंज को कथा का केंद्र बनाया गया है। इस उपन्यास में पूरा अंचल ही नायक बन गया है। घटना-सूत्र खुद ही अपनी कहानी कहते हुए गाँव की कहानी बन जाती है। उपन्यास की भाषा, बिम्ब सजीव है। मिट्टी की गंध शब्द-बिम्बों में आकार ग्रहण कर बोलती प्रतीत होती है। यह रेणु की सबसे बड़ी सफलता है। भावना, विचार या सिद्धांत को आरोपित न करके व्यंजित करना रेणु का स्वर आशावादी और संदेश मानवतावादी है, किंतु उपन्यास के अंत में तहसीलदार साहब के नाटकीय हृदय-परिवर्तन को छोड़कर यह कहीं भी कथा पर आरोपित नहीं है। आंचलिक उपन्यासों की चरित्र-चित्रण परंपरागत उपन्यासों से अलग है। उपन्यासों में चित्रित किये गये परिवेश ही इस भिन्नता का मूल कारण है। ऐसे उपन्यासों में लेखक की दृष्टि प्रधानत: विशिष्ट अंचल विशेष की ओर होती है और उसी अंचल को जीवंत रूप देने का प्रयास करते हैं। फलस्वरूप अंचल विशेष के स्वरूप को उदघाटन करने के लिए चरित्र के सामग्रिक व्यक्तित्व के विपरीत लेखक चारित्रिक कार्य-कलापों में विशेष ध्यान देते हैं। आंचलिक उपन्यासों में साधारणत: नायक नहीं होते। उपन्यास में चित्रित परिवेश ही मुख्य भूमिका

निभाते हैं। ग्राम्य जीवन के परिवर्तित परिस्थिति, परिवर्तित मूल्यबोध, मानवीय संपर्क आदि के विकास के लिए चरित्रों का विकास आवश्यक है और इसी कारण लेखक वातावरण पर्यवेक्षण के लिए उपन्यास में विशेष रचनाशैली का आश्रय लेते हैं। मैला आँचल उपन्यास की कथा का मुख्य चरित्र डॉ. प्रशांत एक युवा चिकित्सक है। जिन्होंने डॉक्टरी शिक्षा समाप्त की और एक पिछड़े हुए जगह में काम करना शुरू किया और वहीं ग्राम्य जीवन की अनग्रसरता, अंधविश्वास, अज्ञानता आदि दूर करने के लिए उन्होंने संग्राम चलाया। स्वराज आंदोलन का प्रभाव ग्रामांचल को भी छू रहा था और जनसाधारण के बीच एक नयी चेतना जाग्रत हो रही थी। लेखक ने ग्राम्य जीवन के प्रामाणिक अनुभूतियों को अत्यंत गंभीर और जीवंत रूप में इस उपन्यास में प्रतिफलित की है। मैला आँचल में चित्रित पूर्णिया जिले का सबसे पिछड़ा हुआ गाँव है मेरीगंज। गाँव इतना पिछड़ा है कि मलेरिया सेंटर खोलने के लिए अधिकारी आये तो हल्ला हुआ कि मीलेटरी आ गये। गाँव में शिक्षा व्यवस्था नहीं के बराबर है। इसमें कुल दस आदमी ही ऐसे हैं, जो साधारण पढ़े-लिखे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रभाव से जो नया बदलाव समाज-जीवन में रहा था और इस बदलाव को ग्रामांचल के लोग किस रूप में ग्रहण कर रहे थे, उसके यथार्थ दस्तावेज है मैला आँचल। रेणु का मेरीगंज बड़ा गाँव है। यह तंत्रिमा क्षत्रिय, यदुवंशी क्षत्रिय, गहलौत क्षत्रिय, कुर्म क्षत्रिय, धनुकधारी क्षत्रिय, कुशवाहा क्षत्रिय, अमात्य ब्राह्मण तथा रैदास आदि टोलियों में बँटा है। संथाल टोली को गाँव से अलग समझा जाता है। गाँव में मुख्यत: तीन दल हैं - राजपूत, कायस्थ और यादव। राजपूतों के मुखिया राम किरपाल सिंह, कायस्थों के विश्वनाथ प्रसाद और यादवों के रामखेलापन यादव है। ब्राह्मण तीसरी शक्ति का काम करते हैं। राजपूत और कायस्थ संपन्न हैं। दोनों मिलकर पूरे गाँव का शोषण करते हैं। इस प्रकार एक परंपरागत चित्र गाँव की रूढ़िवादी-पुरातनवादी मानसिकता को रेखांकित करता है। ऐसे गाँव में मात्र एक अनपढ़ कांग्रेसी कार्यकर्ता है, जिस पर गांधीवाद की छाप है। ग्राम सुधार, सेवा व्रत की हवा इसी बलदेव नामक कार्यकर्ता के द्वारा पहुँचती है। वह कहता है कि हम अपने गाँव में झाड़ू देंगे, मैला साफ करेंगे, महात्मा जी खुद मैला साफ करते थे। इस प्रकार स्वराज की पहला लहर इस पिछड़े गाँव में आती है। भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद भी साधारण जनता के मन में बौद्धिक परिवर्तन अपेक्षित रही और यही हालत मेरीगंज अंचल के साधारण जनताओं की थी। मेरीगंज में पहली बार स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव परिलक्षित होता है। जब जुलूस निकलता है तो गाँव की मामा नामक एक समझदार आदमी लोगों को इनक्लाब जिंदाबाद का अर्थ इन शब्दों में समझता है। इन किलास जिंदाबाघ का अर्थ है हम जिंदा बाघ है (मैला आँचल, पृ सं 45)।

इस प्रकार रेणु ने मैला आँचल में अपने देश में उत्पन्न स्वातंत्र्योत्तर गिरावट के मूल स्रोत को सांकेतिक रूप से बयान किया है। ग्रामांचल के लोगों की निरक्षरता, कुसंस्कार, अंधविश्वास आदि के फलस्वरूप समाज-जीवन में अनेक प्रकार की बेमेल, विशृंखल अवस्था पैदा होती है। परंपरागत रूढ़ियों के टूटने, नयी नैतिकता के पनपने, धार्मिकता के प्रति अविश्वास की संकेत यहाँ मिलते हैं। कुल मिलाकर मेरीगंज गाँव में नयापन अनेक दिशाओं से आता हुआ दिखाई पड़ता है। मलेरिया सेंटर और अन्य माध्यमों के जरिए इसी नयेपन की सघर्षों में रेणु के इस उपन्यास का आकर्षण बढ़ता जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात मनुष्य के मन में जो स्वतंत्र्योत्तर गिरावट थी, उसको भी यहाँ उजागर किया गया है। इसीलिए सुराजी बावनदास कहता है कि भारतमाता अब भी रो रही है (पृ सं 158)। उनकी धारणा थी कि खद्दर और तिरंगा के अलावा सभी चीजें मिथ्या हैं। उस समय आंदोलन की सहायता के लिए ग्रामीण परिवारों ने अपनी मर्जी से चावल दान किये थे।

हांडी में चावल डालने से पहले परम भक्ति और श्रद्धा से एक मुट्ठी चावल गांधी बाबा के नाम पर कूट-पीसकर मजदूरी मिली है। उसमें से एक मुट्ठी, भूखे बच्चों का पेट काटकर एक मुट्ठी... (पृ सं -177)।

इस प्रकार कथाकार ने बदलती हुई परिस्थितियों का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। इस प्रस्तुतीकरण में आधुनिकता के आयामों का अवतरण भी है। गाँव में चिकित्सा-सेवा में नियुक्त एक डॉक्टर के मत भी नयी चिंता डाल देती है। आज हर आदमी के अंदर का भूखा टामी अधीर हो उठा है। काले बाजार के अंधेरे में एक नयी दुनिया की सृष्टि हो गयी है। इस दुनिया में माँ, बेटा, पिता-पुत्र, भाई-बहन और स्वामी-स्त्री जैसा कोई संबंध नहीं (पृ सं-189)। शहर की हवा लोगों को बदल रहा है। नैतिकता के खेमे उखड़ रहे हैं। इन परिस्थितियों के कारण अर्थनैतिक और सामाजिक स्थितियों में भी परिवर्तित हो रहा है । सांप्रदायिकतावाद, वर्ग-संघर्ष आदि के प्रकोप बढ़ रहे हैं। मैला आँचल का उत्तरार्ध एक प्रश्नबोधक वाक्य से शुरू होता है। सुराज्य मिल गया! (पृ.सं. -268) और इसके बाद रेणु ने विभिन्न घटना, उपघटनाओं के माध्यम से उस अंचल की पीड़ा को सार्वजनीन रूप देने का प्रयास किया है। उन्होंने लिखा है कि इस इलाके के मझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूंजी हो गयी, तंबाकू, धान, पाट और मिर्चा का भाव एक साल चढ़ गया, घर में सादी-गमी नहीं हुई तो वह तुरंत टनमना जाते हैं। यदि मालिक जवान हो तो तुरंत औन-पौन करने लगता है (पृ.सं.-271)। इस प्रकार इस उपन्यास में आंचलिक जीवन के वास्तविक चित्र प्रतिफलित हुई है। स्वतत्रता के बाद स्थितियों में मूलत: विशेष परिवर्तन नहीं आया, लेकिन अल्प संख्यक जनता इससे खुश है और वे लोग नृत्य-गीत के माध्यम से मन के आनंद उल्लास प्रकाशित कर रहे हैं। ये भी एक व्यंग्य ही है, क्योंकि पाठक बराबर महसूस करता है कि स्थितियों में मूलत: कोई फर्क नजर नहीं आ रहा है। मैला आँचल उपन्यास में लेखक के ग्राम जीवन से जुड़ी गंभीर दृष्टिकोण है। मैला आँचल में गाँव की जीवन-धारा का व्यापक परिवर्तन सूचित किया गया है। मैला आँचल के साथ हिंदी उपन्यास परंपरा में एक नये प्रकार के कथा-शिल्प का विकास होता है। कथा में किसी केंद्रीय पात्र को महत्व न देकर रचनाकार पूरे कथांचल को महत्व देता है। पूरा अंचल रचनात्मक व्यक्तित्व प्राप्त करता है। कोई भी भू-अंचल मात्र मनुष्यों से ही नहीं बनता, उसमें ऊसर-बंजर जमीन, हरे-भरे खेत, जंगल, बाग नदी-नाले, ताल-पोखर, टीले, खंडहर, पशु-पक्षी सब होते हैं। गाँव का इतिहास होता है। ग्रामीणों के जीवन में अनेक अंधविश्वास, मिथकीय कथाएँ, पौराणिक देवी-देवता, ग्राम-देवता, पर्व, त्योहार, नृत्य-गीत, लोककथाएँ, अनुश्रुतियाँ आदि का एक पूरा संसार होता है। गाँव का आदमी वर्तमान से ज्यादा अतीत में जीता है। गाँव के लोगों के लिए पूरा प्राकृतिक परिवेश अपने पड़ोसी और मित्र के जैसे प्रिय है। व्यक्ति को केंद्र में रखकर लिखे गये उपन्यासों की तुलना में किसी भू-अंचल को केंद्र में रखकर उपन्यास लिखना कठिन कार्य है। मैला आँचल लिखकर रेणु ने यह दुष्कर कार्य सम्पन्न किया है। इन कलात्मक उपलब्धियों के अतिरिक्त रेणु ने पूरे उपन्यास में तत्कालीन ग्रामीण लोकमानस का तटस्थ विश्लेषण करके और स्फूर्ति प्रदायी आईना उपस्थित किया है। पूर्णिया जिले के जिस एक पिछड़े गाँव को वह अंकित करता है, उसमें अवमूल्यन, विघटन, गिरावट, नैतिकता के प्रति विद्रोह कि गहरी सरगर्मी है। स्वराज्य कि छाया मैले ग्रामांचल को झकझोर कर जगाती है और उसे अपूर्व जागृति की उभरती दिशाओं के प्रति चेतित, संवेदित करके गहन विरोधाभासों में डुबो देती है। गाँव और नगर को छोड़कर युग परिवर्तन कि स्थितियों की यथावत पकड़ के लिए रेणु ने आंचलिक इकाई का चुनाव किया है और इससे बिखरी मानसिकता, बिखरे

सामाजिक जीवन के अनुरूप वैविध्यपूर्ण पृष्ठभूमि सहज रूप में उपलब्ध हो गयी है। उपन्यास का अंचल मैथिली भाषा का अंचल है, इसलिए मैथिली के गीतों के साथ साथ मैथिली भाषा का भी प्रयोग यत्र-तत्र हुआ है। साथ ही लेखक ने कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है। मैला-आँचल में मुहावरों और कहावतों का बहुतायत से प्रयुक्त हुआ है। उपन्यास में कई स्थानों पर सुंदर सूक्तियाँ भी हैं। यह उल्लेख करना उचित होगा कि किसी एक अंचल के जनजीवन की प्रकृत प्रतिच्छवि प्रतिफलित करने के लिए, चरित्रों की मानसिक स्थिति को संवेदनशील बनाने के लिए, उस जगह की स्थानीय भाषा, शब्दरूप, मुहावरे और कहावतों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आंचलिक उपन्यास में सृजनात्मकता तथा साहित्य में समृद्धि साधन के लिए जनभाषा सहायक सिद्ध होती है।

इस उपन्यास में विभिन्न प्रसंगों में हास्य, व्यंग्य, विनोद के प्रसंग है। अलंकारों का भी यथास्थान अतिरेक न करते हुए प्रयोग हुआ है। मैला आँचल की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसकी गीतात्मकता है। आंचलिक उपन्यास में लोक-जीवन की झलक प्रतिबिंबित होती है। ऐसे उपन्यासों में अंचल विशेष के लोक-जीवन को बिम्ब, प्रतीक, शब्द आदि के माध्यम से नये रूप में चित्रित करके नये अर्थ की सूचना की जाती है। आंचलिक उपन्यासकारों में फणीश्वर नाथ रेणु ने ही पहली बार उपन्यास की रचना करते समय बिम्ब, प्रतीक, संकेत, ध्वनि आदि के सार्थक प्रयोग किया है। मैला आँचल और परती परिकथा इसका सार्थक निदर्शन है। इस उपन्यास में लेखक ने विभिन्न प्रसंगों में अनेक साहित्यकारों का और उनकी रचनाओं का उल्लेख करके प्रसंग को आधुनिक संदर्भों के साथ जोड़ा है और समकालीन साहित्यकारों के प्रति अपना आकर्षण भी व्यक्त किया है। इससे पहले के जिन उपन्यासों को आंचलिक कह दिया जाता है, उसका परिवेश मात्र आंचलिक है। उस परिवेश के भीतर बहती हुई जीवन धारा समाजकेंद्रित न होने से आंचलिक नहीं है।

मैला आँचल ने आँचलिक परिवेश के अतिरिक्त समाजकेंद्रित आंचलिक जनजीवन को सबसे पहले अपना विषय बनाया। निर्मल वर्मा ने ठीक ही कहा है -

''मैला आँचल और परती परिकथा सहज उत्कृष्ट आंचलिक उपन्यास नहीं हैं, वे भारतीय साहित्य में पहले उपन्यास हैं, जिन्होंने भारतीय उपन्यास को एक नयी दिशा दिखाई थी, जो यथार्थवादी उपन्यास के ढाँचे से बिलकुल भिन्न थी। रेणु जी पहले कथाकार थे, जिन्होंने भारतीय उपन्यास को जातीय संभावनाओं की तलाश की थी।'' ■

सहायक ग्रंथ सूची :

1. कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु : डॉ. चंद्रभानु सोनवणे, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. हिन्दी उपन्यास : डा रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नाटकीय तत्व : डॉ. ओमप्रकाश शर्मा प्रकाश विक्रम प्रकाशन, ई 5/13, कृष्ण नगर,दिल्ली
4. समकालीन हिन्दी उपन्यास : डॉ. विवेकी राय, राजीव प्रकाशन, 189-ए / 1, आलोपीबाग, कॉलोनी,इलाहाबाद -6
5. भाषा-साहित्य-संस्कृति-चिंता : असमिया विभाग, सुरेन दास महाविद्यालय, हाजो, असम
6. हिन्दी उपन्यास 1950 के बाद : संपादक : निर्मला जैन, नित्यानन्द तिवारी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, दरियागंज, नयी दिल्ली
7. समकालीन हिन्दी उपन्यास, कथ्य-विश्लेषण : डॉ. प्रेमकुमार,इन्दु प्रकाशन, अलीगढ़

सहायक अध्यापिका, हिंदी विभाग
बरपेटारोड हाउली कॉलेज, हाउली, बरपेटा, असम